Registration No. V-36244/2008-09 **ISSN :- 2350-0611**

The journal has been listed in 'UGC Approved List of Journals' with Journal No. – 48441 in previous list of UGC

JIFE Impact Factor – 3.23

Research Highlights

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor
Dr. Kamlesh Kumar Singh
Assistant Professor
Gaya Prasad Smarak Govt. P.G. College
Azamgarh

Volume - VIII **No. - 4** **(Oct. – Dec. 2021)**

Published by
Future Fact Society
Varanasi (U.P.) India

CONTENTS

"Research Highlights"

➲	भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं ***डॉ. अनुभा श्रीवास्तव***	01-05
➲	प्रसन्नराघव का भाषागत वैशिष्ट्य ***दिव्या शुक्ला***	06-10
➲	श्रम संगठन में कार्मिक प्रबन्धन की अवधारणा ***डॉ. सन्तोष कुमार सिंह***	11-13
➲	ताल एवं तबले का ऐतिहासिक अवलोकन ***संध्या यादव***	14-17
➲	नारी देह स्वतंत्रता का प्रस्थान बिन्दुः मित्रो मरजानी ***डॉ. आकांक्षा सिंह***	18-21
➲	डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' एवं हिन्दी दलित पत्रकारिता ***दशरथ राम***	22-24
➲	उत्तर प्रदेश में नई जनसंख्या नीति–2021 की अपरिहार्यता ***डॉ. कृष्ण कुमार सिंह***	25-30
➲	वर्ण व्यवस्था में बहिष्करण ***डॉ. गीता यादव***	31-36
➲	विदेशी यात्रियों का यात्रा वृत्तान्त ***डॉ. नीता यादव***	37-42
➲	मैथिलीशरण गुप्त का काव्य और स्त्री अस्मिता ***डॉ. राम आशीष***	43-47
➲	वर्तमान परिदृश्य में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम की समीक्षात्मक अध्ययन ***डॉ. एस0पी0 सिंह*** ***धीरेन्द्र कुमार सिंह***	48-50
➲	नागार्जुन के उपन्यासों में क्रांन्तिकारी चेतना ***राम बहादुर यादव***	51-53

वर्तमान परिदृश्य में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम की समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. एस0पी0 सिंह*
धीरेन्द्र कुमार सिंह**

स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं के प्रति चिंता राष्ट्रीय लोकतंत्र में भी एक महत्वपूर्ण आयाम थी। यही कारण कि लगभग सत्तर से अस्सी के दशक के मध्य में ही यह महिलाओं के प्रति चिंता का विषय एक शैक्षणिक चर्चा के रूप में भी सम्मिलित किया गया। परन्तु इन सबके बावजूद वर्तमान में भी भारत के कुछ राज्यों में महिला–पुरुष लिंगानुपात के बीच असन्तुलन बड़ी मात्रा में देखा गया है जो आज भी महिला सुरक्षा के प्रति सभ्य समाज की चिंता जाहिर करती है। इस दिशा में भारत सरकार ने एक अहम पहल करते हुये 'बेटी बेचाओं, बेटी पढ़ाओ' नामक योजना की शुरूआत की।

आज देश की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा बेटी पैदा ही नहीं करना चाहता अगर बेटी की जन्म होती भी है तो परिवार में खुशी का माहौल नहीं रहता है, जो इसी का नतीजा है कि हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या दिन–प्रतिदिन कमी होती जा रही है। अगर हम वर्ष 1991 में लड़कियों की संख्या जाने तो जहाँ 945 थी वहीं 2001 में यह घटकर 927 और 2011 में 918 हो गई । जो यह एक भयंकर चिंता का विषय बन गया है। सम्पूर्ण भारत में लड़कियों को शिक्षित बनाने और उन्हें बचाने के लिये प्रधानमंत्री जी ने बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ नाम से लड़कियों के लिये एक योजना की शुरुआत 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत से की ।

इस योजना में तीन मंत्रालयों – महिला और बाल विकास मंत्रालय (Women and Child Development), स्वास्थ्य परिवार कल्याण मंत्रालय (Health and family Welfare) तथा मानव संसाधन मंत्रालय (Human Resource Development) की संयुक्त पहल पर व अभिसारित प्रयासों के अन्तर्गत लड़कियों को संरक्षण और सशक्त करने के लिये बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओं योजना को कार्यान्वित किया जा रहा है।

इस योजना का आरंभ पानीपत (हरियाणा) में 22 जनवरी 2015 को हुआ। पूरे देश में हरियाणा में लिंगानुपात 1000 लड़कों पर 775 लड़कियाँ की संख्या है जो बेटियों की दयनीय स्थिति की ओर इंगित करत, इसका मुख्य कारण शिक्षा की कमी है जिसकी जीवन दशा में सुधार हेतु हरियाणा सरकार ने इस कार्यक्रम की पहल की। लड़कियों की दशा को सुधारने के लिये पूरे देश के 100 जिलों में इसे प्रभावशाली तरीके से लागू किया गया है, सबसे कम स्त्री–पुरुष अनुपात होने की वजह से हरियाणा के 12 जिलों (अंबाला, कुरुक्षेत्र, रिवारी, भिवानी, महेन्द्रगण, सोनीपत, झज्जर, रोहतक, करनाल, यमुना नगर, पानीपत और कैथाल) आदि का चुनाव किया गया।

लड़कियों की स्थिति को सुधारने और उन्हें महत्व देने के लिये हरियाणा सरकार 14 जनवरी को 'बेटी की लोहड़ी' नाम से एक कार्यक्रम भी चलाती है। इस योजना का उद्देश्य लड़कियों को सामाजिक और आर्थिक रुप से स्वतंत्र बनाना है जिससे वो अपने उचित अधिकार और उच्च शिक्षा का प्रयोग कर सकें। आम जन में जागरुकता फैलाने में ये मदद भी करता है साथ ही महिलाओं को दिये जाने वाले लोक कल्याणकारी सेवाएँ की कार्यकुशलता को भी बढ़ाता है जिससे वे आत्मनिर्भर होने के साथ–साथ विकास भी कर सकें। 2011 के सेंसस रिपोर्ट पर नजर डाले तो हम पाएँगे कि पिछले कुछ दशकों से 6 वर्ष के लड़कियों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। 2001 में ये 927:1000 था जबकि 2011 में ये और गिर कर 919:1000 पर आ गया। अस्पतालों में आधुनिक लक्षण यंत्रों के द्वारा लिंग पता करने के बाद गर्भ में ही कन्या भ्रुण की हत्या

* एसोसिएट प्रोफेसर, के.एन.आई.पी..एस.एस., सुल्तानपुर
** शोध छात्र, के.एन.आई.पी..एस.एस., सुल्तानपुर

करने की वजह से लड़कियों की संख्या में भारी कमी आयी है। समाज में लैंगिक भेदभाव की वजह से ये बुरी प्रथा अस्तित्व में आयी।

घर या परिवार में जब लड़कियों का जन्म होता तभी से वे तरह–तरह के भेदभाव से गुजरने लगती हैं– जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, खान–पान, अधिकार आदि जरुरतें उनके जीवन में होती है, उनको भी मिलनी चाहिये। इससे लड़कियों/महिलाओं को सशक्त करने के बजाय अशक्त देखने को मिलता है। इसी रूढ़ीवादी भावना की वजह से सरकार ने इस योजना के तहत् महिलाओं को सशक्त बनाने और उनको अधिकार देने के लिये पहल की है। महिलाओं के सशक्तिकरण से ही समाज अथवा घर, परिवार की प्रगति संभव होती है। इस योजना से लड़कियों को शिक्षित कर पुरुषों के नकारात्मक छवि में परिवर्तन लाना ही इस योजना का मकसद है। ये संभव है कि इस योजना से लड़कों और लड़कियों के प्रति भेदभाव खत्म हो जाये तथा कन्या भ्रुण हत्या का अन्त करने में ये मुख्य कड़ी साबित होगी। इस योजना की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के चिकित्सको को स्मरण कराया कि चिकित्सकीय पेशा से संबंधित लोगों को जीवन देकर उन्हें खुशहाल करें न कि उनकों कष्ट देकर हानि पहुंचाये बल्कि समाज के लोगों के भीतर गरिमा एवं प्रेम की भावना जागृत करें।

इस योजना के आरंभ होने से लड़के–लड़कियाँ शिक्षित होंगे और उनके बीच भेदभाव की दूरी कम होगी जिससे समाज में एक बदलाव लाएगा। लड़कियों को लड़कों के मुकाबले कम समझने वालों को लड़कियों का मूल्य समाज में बढ़े जो इस तरीके की स्कीम व योजना का हमारे देश में आरंभ होना ही हमारे लिए बहुत गर्व की बात है, जिससे हमारा समाज ही नहीं बल्कि देश भी भविष्य की ओर अग्रसर होगा। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना की शुरूआत "बेटा–बेटी एक सामान" के नारे से आरंभ की। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा गोद लिये गये गाँव जयापुर के नागरिकों को बताया कि हमारा मंत्र यही होना चाहिए *'बेटा बेटी एक समान'*। "आइए कन्या के जन्म का उत्सव मनाएं और हमें अपनी बेटियों के जन्म पर बेटों की तरह ही गर्व करें और साथ ही बेटी के जन्मोत्सव पर पांच पेड़ लगाएं।"

इस योजना के मुख्य घटकों में शामिल हैं प्रथम चरण में पीसी तथा पीएनडीटी एक्ट को लागू करना, राष्ट्रव्यापी जागरूकता और प्रचार अभियान चलाना तथा चुने गए 100 जिलों (जहां शिशु लिंग अनुपात कम है) में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कार्य करना। बुनियादी स्तर पर लोगों को शिक्षण–प्रशिक्षण देकर, संवेदनशील और जागरूक बनाना तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी विचारधारा को बदलने पर जोर दिया जाना है। सरकार कन्या शिशु के प्रति समाज के नजरिए में परिवर्तनकारी बदलाव लाने का प्रयास कर रही है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की आरम्भ होना के बाद से लगभग सभी राज्यों में मल्टी एण्ड सेक्टोरीयल डिस्ट्रिक्ट एक्शन प्लान्स चलाए जा रहे हैं। जिससे जिला स्तर के कर्मचारियों तथा फ्रान्टलाइन वर्कर्स (frontline workers) की क्षमता को और बढ़ाने के लिए प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं और उन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अप्रैल से अक्टूबर 2015 तक इस तरह के नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं जिसमें सभी राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय को शामिल किया गया।

बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना के लाभ –

इस योजना के तहत् लड़किया को कई लाभ है जो निम्नवत है–

1. इससे लड़कियों को वित्तीय सहायता मिलती है जिससे उनकी शिक्षा में बाधा उत्पन्न न हो।
2. इस योजनान्तर्गत उच्च शिक्षा से वंचित लड़कियों को उच्च शिक्षा को प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है जिससे वे शिक्षित होकर पुरुषों की तरह समाज व नौकरियों में अपना योगदान दे सके ।
3. अधिकतर यह देखने को मिलता है कि लड़कियों के विवाह आर्थिक कमजोरी की वजह से विवाह टुट जाना व कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस योजना के तहत् वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है जिसे समस्याओं का निदान हो सके।
4. यह योजना एक शिक्षित योजना है जिससे कन्या भ्रूण हत्या को रोकने में मदद मिलता है।

5. बेटी बचाओं–बेटी बचाओं की इस मुहिम से लड़कियों को पुरुषों के समकक्ष ही नहीं खड़ा करेगी बल्कि उनके भविष्य को उजागर करने को पूरी मदद मिलेगी।

योजना का निम्न रूप–

इस योजना को सरकार द्वारा डिस्ट्रिक्ट लेबल, एट ब्लाक लेबल और ग्राम पंचायत पर लागु किया गया है। साथ ही समाज में इस नारा को फैलाने के लिये समय–समय पर कई प्रोग्राम और उनको इस योजना के विषय में जानकारी दी जाती है ताकि लड़कियों को लड़कों को बीच भेदभाव दूर किया जा सके।

इसी योजना के तहत सुकन्या समृद्धि योजना या सुकन्या देव योजना जैसी स्कीम को लागु किया गया है जिसमें छोटी बच्चियों की आयु सीमा दस वर्ष रखा गया है। इस योजना का फायदा किसी भी बैंक या डाकघर में (लडकी की जन्म प्रमाण पत्र, माता–पिता का पहचान प्रमाणपत्र प्रमाणपत्र देकर) खाता खोलवाकर इसका लाभ लिया जा सकता है। सरकार ने इस योजना को इनकम टैक्स फ्री किया है। यही नहीं बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना के तहत् खाता खोलवाने पर ज्यादा ब्याज की राशि भी देने का प्रस्ताव घोषित किया जा चुका है। स्पष्टतः बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं कार्यक्रम द्वारा मिलने वाले लाभ से लड़कियों को भी लड़को के समान उच्च शिक्षा की प्राप्ति संभव हो रही है तथा समाज में शिक्षित होकर अपने को गौर्वान्वित महसुस कर रही है।

उपरोक्ततः यह स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा आरंभ की गयी कार्यक्रम 'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओं योजना' से लोगों के अन्दर जागृति पैदा हो रही है और हमारे समाज में बेटियों के प्रति जो निम्न सोच की भावना बैठी है एवं उनको महत्व को न समझना, आगे की शिक्षा से वंचित रखना जैसी सोच की प्रवृत्ति को बदलने में सहायक सिद्ध हो रही है। चाहे बेटी हो या बेटा एक समान स्तर से उनके खुशहाल जीवन और उनके भविष्य को उज्जवल बनाने में कारगर है। यह सत्य है कि एक बेटी जब शिक्षित होगी त बवह एक बड़े परिवार को चलाने में सक्षम होगी है और बच्चों को एक बेटी ही मॉ का रूप लेकर उसमें संस्कारिक शिक्षा देती है। एक अच्छे सभ्य समाज का विकास ही हमारा देश विकासोन्नमुख की तरफ अग्रसर होगा।

संदर्भ–ग्रन्थ –

1. पीएम टु लांच 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' प्रोग्राम फ्राम हरियाणा।
2. माई गोव डॉट इन/ग्रुप_इनफो/बेटी–बचाओ–बेटी–पढाओ।
3. लाइव हिन्दुस्तान डॉट काम ।
4. खबर डॉट एनडीटीवी डॉट काम. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
5- http://hindi.mapsofindia.com/my-india/india/beti-bachao-beti-padhao
6- Http://Bankersadda.Me/Sukanya-Samridhi-Yojana/
7. योजना पत्रिका, भारत सरकार, जनवरी, 2017, पृ0 13
8. मासिक पत्रिका बनिता, मार्च, 2016, पृ0 38
9. कुरूक्षेत्र पत्रिका, भारत सरकार, अक्टुबर 2016, पृ0 25